जीविका
ग्रामीण विकास विभाग, बिहार सरकार

जीविका समाचार पत्रिका

।। माह – दिसंबर 2025 ।। अंक – 65 ।। केवल आंतरिक वितरण हेतु।।

अन्दर के पृष्ठों में...

संकल्प से सफलता तक: मंजू देवी की प्रेरक यात्रा (पृष्ठ – 02)

विमला के जीवन में बदलाव की वाहक बनी जीविका (पृष्ठ – 03)

छोटी मेहनत से बड़ा परिवर्तन: उषा देवी की अगरबत्ती उद्योग की प्रेरक कहानी (पृष्ठ – 04)

जीविका सामुदायिक संगठनों के माध्यम से संगठित एवं सशक्त हुई महिलाएँ

जीविका का मूल उद्देश्य गरीब महिलाओं को सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से सशक्त बनाना है, जिससे वे गरीबी के दुष्चक्र से बाहर निकल सकें। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु जीविका द्वारा सामुदायिक संगठनों का निर्माण, उनका क्षमतावर्द्धन, वित्तीय लेन–देन, जीविकोपार्जन संवर्धन एवं नियमित लेखांकन पर बल दिया गया है। जीविका सामुदायिक संगठन महिलाओं के लिए एक मंच प्रदान करता है, जिसके माध्यम से वे विभिन्न प्रकार की सामजिक एवं आर्थिक गतिविधियों से जुड़कर अपने जीवन स्तर में बदलाव ला रही हैं। जीविका अन्तर्गत त्रिस्तरीय सामुदायिक संगठनों का गठन किया जाता है।

स्वयं सहायता समूह : सर्वप्रथम गाँवों का सामाजिक एवं आर्थिक आकलन करने के उपरांत स्थानीय स्तर पर 10 से 15 गरीब महिलाओं को मिलाकर एक स्वयं सहायता समूह का गठन किया जाता है।

ग्राम संगठन : 10 से 15 स्वयं सहायता समूहों को मिलाकर एक ग्राम संगठन का निर्माण किया जाता है। यह विभिन्न समूहों के बीच कड़ी का काम करता है तथा उन समूहों के कार्यकलापों का अनुश्रवण, समस्याओं के समाधान एवं विकास योजनाओं को समूहों के सदस्यों तक पहुँचाने में सहयोग और समन्वय का काम करता है।

संकुल स्तरीय संघ : 12 से 35 ग्राम संगठनों को मिलाकर एक संकुल स्तरीय संघ (सीएलएफ) का गठन किया जाता है। यह ग्राम संगठनों को नेतृत्व प्रदान करता है एवं उनके बीच आपसी समन्वय स्थापित करता है। सीएलएफ ग्रामीण विकास से संबंधित विभिन्न कार्यक्रमों से स्वयं सहायता समूह के सदस्यों को जोड़ता है एवं समन्वय स्थापित करता है। सीएलएफ संबंधित ग्राम संगठनों को सक्षम जीविकोपार्जन गतिविधियों से जोड़ने में सहायता प्रदान करता है। सीएलएफ ग्राम संगठनों के लिए वार्षिक कार्य योजना तैयार करता है, जिससे परियोजना के मूल कार्यक्रमों को समुदाय स्तर से लागू किया जा सके। साथ ही, ग्राम संगठनों में वित्तीय लेन–देन का अंकेक्षण करवाता है ताकि इसके काम काज में पारदर्शिता लाई जा सके। सामुदायिक संगठनों के लिए कार्य करने वाले सभी प्रकार के सामुदायिक पेशेवरों का चयन, प्रशिक्षण, उनके कार्यों की समीक्षा एवं अनुश्रवण और उनके मानदेय का भुगतान सीएलएफ द्वारा किया जाता है।

क्षमतावर्धन : जीविका स्वयं सहायता समूह के माध्यम से महिलाएँ सामाजिक रूप से संगठित हुई हैं एवं उनका क्षमतावर्द्धन किया गया है। समूह का गठन होने के बाद सदस्यों को विभिन्न मॉड्यूल्स का प्रशिक्षण दिया जाता है। पहले मॉड्यूल के अंतर्गत गरीबी, गरीबी का दुष्चक्र, इससे बाहर निकलने के रास्ते और स्वयं सहायता समूह की आवश्यकता के बारे में बताया जाता है। दूसरे मॉड्यूल के तहत समूह की बैठक की प्रक्रिया, एजेंडा निर्धारण, बचत, लेन–देन और ऋण वापसी आदि की जानकारी दी जाती है। बैठक की प्रक्रिया में प्रार्थना, परिचय और समूह के पंचसूत्र जैसे विषय शामिल हैं। समूह में आपसी परिचय से वे एक दूसरे को अच्छी तरह जान–समझ पाती हैं और उनमें आपसी विश्वास एवं एकता का भाव पैदा होता है। उनमें दूसरों के सामने अपनी बातें रखने की क्षमता भी विकसित होती है। वहीं तीसरे मॉड्यूल में नेतृत्व का महत्त्व, इसकी जिम्मेदारी और खाता–बही (बुक्स ऑफ रिकॉर्ड) के बारे में जानकारी दी जाती है। इसके बाद चौथे मॉड्यूल में समूह के कार्यों की सीमाएं एवं ग्राम संगठन की आवश्यकता के बारे में बताया जाता है। साप्ताहिक बैठक के दौरान महिलाओं को नियमित रूप से शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता और जीविकोपार्जन गतिविधियों के अलावा विभिन्न सरकारी योजनाओं की जानकारी उपलब्ध करायी जाती है। सभी प्रकार के प्रशिक्षणों एवं जानकारियों के प्रसार से महिलाओं में जागरूकता और बौद्धिक क्षमता का स्तर बढ़ा है।

जीविका स्वयं सहायता समूह में जुड़ने के उपरांत महिलाओं को समूह के पंचसूत्रा का पालन करना पड़ता है। इससे एक ओर जहां समूह की कार्यप्रणाली में पारदर्शिता आती है वहीं सदस्यों में समूह के प्रति विश्वास का भाव पैदा होता है। इस प्रकार जीविका सामुदायिक संगठन से जुड़कर महिलाएँ सामाजिक रूप से संगठित हुई हैं एवं सशक्त बन रही हैं।

रोजगार योजना से बढ़ेगी स्मृति की गृहस्थी गाड़ी

भागलपुर जिले के बिहपुर प्रखंड स्थित धर्मपुर रत्ती पंचायत की रहने वाली स्मृति कुमारी को मुख्यमंत्री महिला रोजगार योजना के माध्यम से 10 हजार रुपये प्राप्त हुए हैं। इससे उन्होंने अपने गाँव में आटा चक्की का व्यवसाय शुरू की है। इस व्यवसाय से न केवल उनके परिवार की आय बढ़ेगी बल्कि इससे उद्यमिता के नए अवसर भी खुलेंगे। उनकी आगे की योजना मसाला उद्यम शुरू करने की है, ताकि स्थानीय स्तर पर ही रोजगार के स्थायी साधन सृजित किया जा सके।

स्मृति कुमारी, माँ दुर्गा जीविका स्वयं सहायता समूह की सक्रिय सदस्य हैं। समूह से जुड़ने के बाद उनके जीवन में कई सकारात्मक बदलाव आए हैं। एक समय ऐसा था जब वह घर से बाहर कदम रखने में भी संकोच करती थीं, लेकिन जीविका से जुड़ने के साथ उनका आत्मविश्वास बढ़ा और उन्होंने स्वयं को नई जिम्मेदारियों के लिए तैयार किया। आज वह घर की देखभाल के साथ–साथ अपनी जीविकोपार्जन गतिविधि को भी मजबूती से संभाल रही हैं। स्वयं सहायता समूह की बैठकों में, उपस्थिति, प्रशिक्षण और नियमित बचत की आदत से उनका आत्मविश्वास बढ़ा है।

आटा चक्की शुरू करने का निर्णय उनके लिए एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ। गाँव की महिलाओं को सुविधाजनक सेवाएँ मिलने लगी हैं। स्मृति अपनी सफलता का श्रेय जीविका से प्राप्त सहयोग और मार्गदर्शन को देती हैं। उनका मानना है कि जीविका ने ग्रामीण महिलाओं को स्वरोजगार की दिशा में आगे बढ़ने के लिए सशक्त मंच उपलब्ध कराया है। वह कहती हैं कि महिलाओं को यदि सही दिशा, प्रोत्साहन, साधन और अवसर मिले तो वे अपने परिवार और समुदाय दोनों के लिए बदलाव की मजबूत नींव खड़ी कर सकती हैं। स्मृति की यात्रा इस बात का प्रमाण है कि छोटे कदम भी बड़े बदलाव ला सकती है।

संकल्प से सफलता तक: मंजू देवी की प्रेरक यात्रा

पटना जिले के दुल्हिन बाजार प्रखंड के सलहोड़ी पंचायत की रहने वाली मंजू देवी का जीवन जीविका से जुड़ने के बाद पूरी तरह बदल गया है। पहले उनका जीवन एक साधारण गृहिणी तक सीमित था। वह घर से बाहर कम ही निकलती थीं और समाज के लोगों से उनका संवाद बहुत कम होता था। आर्थिक स्थिति भी अच्छी नहीं थी, जिसके कारण उनका जीवन मुख्यतः घर की जिम्मेदारियों में ही बीतता था। लेकिन जीविका स्वयं सहायता समूह में जुड़ने से उनमें आत्मविश्वास आया, पहचान मिली और आजीविका के नए अवसर खुले।

मंजू देवी ने वर्ष 2017 में अपने उद्यमी सफर की शुरुआत की थी। समूह से ऋण लेकर उन्होंने बकरी पालन का कार्य शुरू किया था। इससे थोड़ी आय हुई। इसके बाद उन्होंने साईकिल मरम्मत की दुकान खोली। साथ ही साथ उन्होंने त्योहारों और विशेष अवसरों पर अस्थायी दुकानें लगाना शुरू किया। इससे उनकी आय में बढ़ोतरी हुई। इसी बीच हाल ही में मुख्यमंत्री महिला रोजगार योजना से 10 हजार रुपये की सहायता मिलने पर उन्होंने झाड़ू बेचने का नया व्यवसाय शुरू किया है। उपने कार्यों का विस्तार कर रही है। इससे उनकी आमदनी में भी इजाफा हो रहा है। परिणामस्वरूप मंजू देवी आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन रही है और समाज में एक महिला उद्यमी के रूप में उन्हें नई पहचान मिल रही है। व्यवसाय के क्षेत्र में कदम रखने से न केवल उनके परिवार की आर्थिक स्थिति बेहतर हो रही है बल्कि उनका सामाजिक सम्मान भी बढ़ा है। उनके प्रयासों से उनके पति को भी रोजगार का अवसर मिला, जिससे परिवार को बड़ा आर्थिक सहारा मिला है।

वह अपने व्यवसाय का विस्तार कर इसे नया आयाम देना चाहती है। वह चाहती हैं कि दुकान में ग्राहकों को जरुरत की सभी वस्तुएँ मिल सकें। जिससे ग्राहकों की सुविधा बढ़ेगी और मंजू की कमाई में भी इजाफा होगा। मंजू ने अपनी मेहनत और लगन से अपने व्यवसाय को सफल बनाया और सफल उद्यमी के रूप में अपनी पहचान बना रही है।

विमला के जीवन में बदलाव की वाहक बनी जीविका

सीतामढ़ी जिले के सोनबरसा प्रखंड के बसहिया पंचायत की रहने वाली विमला देवी का जीवन कभी आर्थिक तंगी से घिरा हुआ था। उनके पति विजय साह एक छोटी सी किराना दुकान चलाते थे। लेकिन उससे होने वाली सीमित आमदनी में चार बच्चों का भरण–पोषण और परिवार की ज़िम्मेदारी संभालना मुश्किल होता था। विमला देवी अपने परिवार की आर्थिक स्थिति सुधार करने को लेकर हमेशा चिंतित रहती थी। लेकिन सही अवसर और साधन के अभाव में वह कुछ नहीं कर पा रही थी।

इसी बीच, साल 2016 में जब वह संगम जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ीं। इसके बाद उनके जीवन में बदलाव की शुरुआत हुई। समूह की बैठकों में जाने से उनका आत्मविश्वास और जागरूकता का स्तर बढ़ा। समूह में आसानी से ऋण की सुविधा मिलने से उनके लिए कुछ कर पाना आसान हुआ। उन्होंने परिवार की छोटी सी पुरानी किराना दुकान का विस्तार करने का फैसला किया। इसी उद्देश्य से उन्होंने 2018 में समूह से 70,000 रुपये ऋण लिया और दुकान में पूँजी निवेश किया। इससे दुकान की स्थिति सुधरने लगी। दुकान की आय से उन्होंने ऋण की वापसी कर दी। इसके बाद वर्ष 2021 में उन्होंने पुनः समूह से 30,000 रुपये ऋण लेकर इसे दुकान में लगाया। इससे दुकान की बिक्री और बढ़ गई। दुकान की बिक्री बढ़ने से कमाई भी बढ़ने लगी।

समय के साथ विमला देवी की मेहनत रंग लाई और अब उनकी दुकान अच्छी तरह चल रही है। वर्तमान में वह अपने किराना दुकान से प्रति माह लगभग 12,000 से 14,000 रुपये की नियमित आय अर्जित कर रही है। इस आमदनी ने न केवल उनकी आर्थिक स्थिति को बेहतर बनाया है, बल्कि परिवार का भरण–पोषण भी अच्छे से कर रही है।

विमला देवी भविष्य में अपने दुकान को और बड़ा करना चाहती हैं। उनकी योजना पुराने ऋणों का भुगतान कर वह दोबारा 2,00,000 रुपये तक का ऋण लेकर दुकान में अधिक पूँजी निवेश करने की है। जिससे दुकान की आय और बढ़ सके। विमला अपने जीवन में आए इस बदालव की वाहक जीविका को मानती है।

मीरा ने अपनी मेहनत और सूझबूझ से उर्वर की जमीन

भोजपुर जिले के आरा सदर प्रखंड स्थित भकुरा पंचायत के पिपराहियाँ गाँव की रहने वाली मीरा देवी का जीवन कभी आर्थिक संघर्षों से भरा हुआ था। खेती से होने वाली सीमित आय से छह सदस्यों वाले परिवार का भरण–पोषण करना बेहद कठिन था।

उपरोक्त परिस्थिति के बीच वह वर्ष 2016 में अड़हुल जीविका महिला स्वयं सहायता समूह से जुड़ी। समूह में जुड़ने के बाद मीरा देवी के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन की शुरुआत हुई। समूह से जुड़ने से पहले उनकी आर्थिक स्थिति बेहद कमजोर थी और किसी भी तरह का व्यवसाय शुरू करने में वह सक्षम नहीं थीं। लेकिन समूह की बैठकों में नियमित रूप से हिस्सा लेने, समूह की दीदियों के बीच विचार–विमर्श एवं सहयोग से उनका आत्मविश्वास बढ़ा और आगे कुछ करने की प्रेरणा मिली।

समूह से जुड़ने के कुछ समय बाद ही उन्होंने समूह से 50,000 रुपये का ऋण लेकर गाय खरीदी और गाय पालन करने लगी। इस कदम से उनके परिवार की आमदनी में स्थिरता आई। घर की आर्थिक स्थिति में सुधार होने लगा। मीरा देवी के लिए यह बदलाव का पहला कदम था। इससे उन्हें आगे और अवसर तलाशने के लिए प्रेरित किया। मुख्यमंत्री महिला रोजगार योजना ने भी उनके जीवन में दूसरा बड़ा परिवर्तन लाया है। इस योजना के तहत उन्हें 10,000 रुपये प्राप्त हुए हैं। इस राशि का उपयोग करते हुए सब्जी की खेती शुरू की है। कम लागत में शुरू किया गया यह रोजगार उनके लिए काफी लाभकारी सिद्ध हुआ है। घर की ज़मीन का बेहतर उपयोग करते हुए उन्होंने नियमित आमदनी का एक नया साधन सृजित किया है। इससे उनकी आर्थिक स्थिति और मजबूत हुई और परिवार की ज़रूरतें भी पूरी होने लगीं है। मीरा देवी का आत्मविश्वास अब पहले से कहीं ज्यादा बढ़ चुका है। उनकी योजना है कि वह अपनी सब्जी खेती को बड़े स्तर पर आगे बढ़ाएँगी। मीरा देवी ने खेती को लाभकारी बनाने की दिशा में कदम बढ़ाकर अपने जीवन को बेहतर बना रही हैं।

छोटी मेहनत से बड़ा परिवर्तन:
उषा देवी की अगरबत्ती उद्योग की प्रेरक कहानी

मुज़फ्फरपुर जिले के मड़वन प्रखंड के जखरा शेख पंचायत की रहने वाली उषा देवी ने कठिन दौर में अपनी हिम्मत को टूटने नहीं दिया बल्कि नया रास्ता अपनाकर अपने जीवन को संवारा। उषा देवी दस वर्ष पूर्व संतोषी जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी थी। उनके पति सोने लाल पासवान पहले बाहर मजदूरी करते थे, लेकिन वर्ष 2020 में लॉकडाउन के दौरान काम बंद होने पर उन्हें घर वापस लौटना पड़ा। आय का स्रोत रुक जाने से परिवार पर संकट गहराने लगा। ऐसे समय में उषा देवी और उनके पति ने अपने जीवन को बदलने के लिए घर पर ही व्यवसाय करने का निर्णय लिया। सोने लाल अगरबत्ती बनाने की तकनीक के बारे में पहले ही अवगत थे। ऐसे में उन्होंने सोचा कि यदि पत्नी का सहयोग मिल जाए तो घर पर ही अगरबत्ती बनाने का छोटा उद्योग शुरू किया जा सकता है।

उन्होंने ढाई लाख रुपये की लागत से अगरबत्ती निर्माण उद्योग शुरू किया। इसके लिए उन्होंने समूह से 1 लाख रुपये का ऋण लिया और शेष राशि का प्रबंधन स्वयं से की। फैक्ट्री स्थापित करने के बाद यूट्यूब की मदद से सोने लाल ने अगरबत्ती बनाने की पूरी तकनीक सीखी। इसके बाद उन्होंने एक ऑटोमेटिक मशीन और एक जैविक मशीन खरीदी, जो फूलों के उपयोग से अगरबत्ती तैयार करती है। उन्होंने अपनी मेहनत और लगन से अगरबत्ती बनाने का काम शुरू किया। आज वह प्रतिदिन 30 से 40 किलोग्राम तक अगरबत्ती तैयार करती हैं। मशीन की दक्षता का अंदाज़ा इससे लगाया जा सकता है कि केवल एक घंटे में 5 किलोग्राम उत्पादन होता है। उषा देवी बताती है कि बाजार में अगरबत्ती 60 से 70 रुपये प्रति किलो की दर पर बिक जाती है जिससे वह प्रति किलोग्राम 15 से 20 रुपये का मुनाफा अर्जित कर लेती है। इस हिसाब से उन्हें प्रतिदिन लगभग 1,000 से 1,200 रुपये की शुद्ध आमदनी हो जाती है। वहीं इस उद्यम से प्रतिमाह औसतन 25,000 से 30,000 रुपये तक की आमदनी हो जाती है।

उषा देवी बताती हैं कि अगरबत्ती का उत्पादन करने से अधिक चुनौतीपूर्ण काम है इसकी नियमित बिक्री। बाजार में कड़ी प्रतिस्पर्धा और बड़े–बड़े ब्रांड की अगरबत्ती के बीच स्थानीय स्तर पर निर्मित अगरबत्ती की पैठ बनाना खासा मुश्किल भरा काम था। ऐसे में ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए एक ही तरीका था– अगरबत्ती की अच्छी गुणवत्ता एवं अच्छा पैकेजिंग। उषा और उनके पति ने इस दिशा में काम की। उनकी मेहनत रंग लाने लगी और अगरबत्ती की अच्छी गुणवत्ता ने ग्राहकों को आकर्षित किया। परिणामस्वरूप धीरे–धीरे बाजार में उनके द्वारा निर्मित अगरबत्ती की मांग बढ़ने लगी। अब वह एक ब्रांड के साथ बाजार में अगरबत्ती के विपणन की तैयारी कर रही हैं, ताकि बाजार एवं ग्राहकों के बीच उनके उत्पाद को एक अलग पहचान मिल सके।

उषा कहती है कि लॉकडाउन ने उन्हें नया रास्ता खोजने के लिए मजबूर किया। यूट्यूब वीडियो देखकर उन्होंने अगरबत्ती उत्पादन की पूरी प्रक्रिया सीखी। कच्चे माल का चयन, लागत, पैकिंग, बाजार में मांग, सप्लाई की व्यवस्था हर पहलू को गहराई से समझी। आज उनकी मेहनत और जीविका के सहयोग से उनका जीवन सचमुच सुगंधित हो उठा है। उसके परिवार की मासिक आमदनी बढ़कर औसतन 30,000 रुपये से अधिक हो गई है। इससे वह अपने परिवार को बेहतर जीवन दे पा रही है। उनकी मेहनत ने न सिर्फ उनकी आर्थिक स्थिति सुधारी है, बल्कि समाज में उन्होंने अगरबत्ती उद्यमी के रूप में अपनी पहचान बनाई है।

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

संपादकीय टीम
- श्रीमती महुआ राय चौधरी –कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – राज्य परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम
- श्री विकास राव – प्रबंधक संचार, भागलपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, नवादा
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, लखीसराय
- श्री बिप्लब सरकार – प्रबंधक संचार